DOI: 10.51220/hjssh.v10i1.5

Himalayan J. Soc Sci.& Humanities (ISSN-0975-9891): 2015, Vol 10, pp 43-53

पश्चिमी एवं मध्य हिमालयी क्षेत्र में दिल्ली सल्तनत के सुल्ताानों की राजनीतिक–सामरिक गतिविधियाँ एवं उनका प्रतिफलन(सन् 1206–1526 ई0)

एस0ए0एच0जैदी, रेहाना जैदी, प्रवेश कुमार

इतिहास विभाग,हे0न0ब0गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर पौड़ी, गढवाल

Received : 23.09.2015 **Accepted: 21.11.2015**

ABSTRACT

अधिकांश पूर्ववती क्षेत्रीय इतिहास लेखकों की अवधारणा है कि तरायन के द्वितीय युद्ध (सन् 1192) और तत्पश्चात, उत्तर भारत में हुए सत्ता परिवर्तन की कोई तात्कालिक एवं प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रतिक्रिया हिमालयो क्षेत्र विशेषकर पश्चिमी तथा मध्य हिमालयी क्षेत्र में नहीं हुई और दिल्ली सल्तनत के आरम्भिक सुल्तान, तो इस पर्वतीय अंचल से पूर्णतया अनभिज्ञ थे। इतना ही नहीं, कुछ इतिहासकारों का तो यह अभिमत है कि मुग़ल सम्राट अकबर से पूर्व किसी भी समकालीन इतिहास लेखक ने इस पवतीय अंचल के विषय में कुछ नहीं लिखा है,परन्तु समकालीन फारसी वृतांन्तकारों–दरबारी इतिहास लेखकों के ग्रन्थों का सूक्ष्म अध्ययन–विश्लेषण करने पर उक्त अवधारणायें निर्मूल सिद्ध होती है।

प्रस्तुत शोध आलेख में उक्त अवधारणाओं का पुनरावलोकन कर उन तथ्यों,साक्ष्यों एवं विवरणों को प्रस्तुत किया गया है,जिनसे यह ज्ञात होता है कि दिल्ली सल्तनत के सुल्तान एवं उनके दरबारी इतिहासाकार पश्चिमी एवं मध्य हिमालयी क्षेत्र में अवस्थित पर्वतीय राज्यों से भिज्ञ थे और इस पर्वतीय अंचल में उनकी सैनिक–राजनीतिक गतिविधियाँ तो सन् 1226–27 से ही आरम्भ हो गई थी।

KEY-WORD: पश्चिमी–मध्य हिमालयी क्षेत्र, दिल्ली सुल्तान,राजनीतिक एवं सामरिक गतिविधियाँ।

सन् 1009 में महमूद गज़नवी ने पंजाब के शासक आनन्दपाल पर आक्रमण किया। इस संघर्ष में काँगड़ा (नगरकोट) की सेना ने महमूद गज़नवी के विरुद्ध आनन्दपाल क पक्ष में युद्ध में भाग लिया। आनन्दपाल की पराजय के पश्चात् महमूद गज़नवी ने द्रुत गति से काँगड़ा की ओर प्रस्थान किया। उसका उद्देश्य काँगड़ा की पंजाब में पराजित सेना के काँगड़ा वापस पहुंचने से पूर्व ही काँगड़ा दुर्ग को हस्तगत करना था।[1]बटाला से एक करोह की दूरी पर स्थित[2] दुर्गम पर्वतीय प्रदेश में अप्रत्याशित गति से कूच करके दुर्ग के निकट पहुँच कर महमूद की सेना ने दुर्ग रक्षकों को आश्चर्यचकित और हतोत्साहित कर दिया। प्रो0 मोहम्मद हबीब ने लिखा है कि महमूद गज़नवी की सफलता का मुख्य कारण उसकी सेना का द्रुतगति से काँगड़ा की ओर प्रस्थान करना था। उसने काँगड़ा से सुरक्षा बलों की अनुपस्थिति का लाभ उठाने के लिए 12 पड़ावों की दूरी को जिस अप्रत्याशित गति से पूरा किया, उससे काँगड़ा दुर्ग रक्षक दुर्ग की रक्षा करने में असहाय हो गये। सेना के अभाव में महमूद का प्रबल प्रतिरोध नहीं किया जा सका।[3] काँगड़ा का अजेय समझा जाने वाला दुर्ग सरलता से महमूद के

© SHARAD

नदिया से पूर्वी बंगाल में पलायन किया। उसका तुर्कों के दबाव के कारण उसने पंजाब की निकटवर्ती पहाड़ियों (पश्चिमी हिमालय क्षेत्र) में पलायन किया। उसके तीन पुत्रों वीरसेन,गिरिसेन और हम्मीरसेन ने इस पर्वतीय अंचल में क्रमशः सुकेत,कयूंठल और किश्तवार राज्यों की स्थापना तेरहवीं शताब्दी के प्रथम दशक (1211–12) में की।[21] कालान्तर में सुकेत राज्य के विघटन से मंडी राज्य अस्तित्व में आया। इसी प्रकार बनागाहल (वीर) की स्थापना सन् 1200 में हुई।[22] बघाट राज्य की स्थापना मध्य भारत से आये अजयदेव नामक पंवार राजपूत सरदार द्वारा की गई।[23] कतिपय लेखकों ने बघाट राज्य का संस्थापक पंवारवंशीय वसन्तपाल को माना है,जो धारानगरी से पलायन करके यहाँ आया था। इस राज्य की स्थापना सन् 1300 में हुई मानी जाती है।[24] धामी राज्य की स्थापना पृथ्वीराज चौहान के एक वंशज द्वारा बारहवीं शताब्दी के अंत में की गई।[25] महलोग की स्थापना भी अयोध्या से पलायन किये हुए हरिचन्द द्वारा की गई।[26] मंगल नामक राज्य की स्थापना मारवाड़ के राजवंश से सम्बन्धित एक राव द्वारा की गई मानी जाती है।[27] बेजा की स्थापना दिल्ली के तोमर राजा के एक वंशज गरबचन्द द्वारा बारहवीं शताब्दी के अंत में की गई।[28] धमेरी (कालान्तर में नूरपुर) की स्थापना भी दिल्ली के तोमर राजपरिवार से सम्बन्धित जेठपाल द्वारा तरायन के युद्ध के पश्चात् की गई।[29] कटलेहर राज्य की स्थापना बारहवीं शताब्दी में संभल (तत्कालीन कटेहर,वर्तमान उ0प्र0 के जनपद मुरादाबाद) से पलायन करके आने वाले एक ब्राह्मण द्वारा की गई,जिसके वंशज कालान्तर में राजा होने के कारण राजपूत कहलाये।[30] मध्य हिमालयी क्षेत्र में अवस्थित कुमाऊँ राज्य के संस्थापक सोमचन्द को कालिन्जर निवासी खड़गसिंह का वंशज माना जाता है।[31] कुछ विद्वानों की धारणा है कि वह चन्देलवंश से सम्बन्धित था तथा मौहम्मद गौरी द्वारा जयचन्द की पराजय के पश्चात् उसने मदानी भू–प्रदेश से कुमाऊँ में पलायन किया था।[32]

उक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि बारहवीं शताब्दी के अंत में उत्तर भारत के मैदानी भू–प्रदेशों में हुए सत्ता परिवर्तन के फलस्वरूप पश्चिमी एवं मध्य हिमालय क्षेत्रों में बड़ी संख्या में राजपूत राजपरिवारों ने मैदानो क्षेत्रों से पलायन किया। यह राजपरिवार सम्पूर्ण तेरहवीं शताब्दी में मैदानी क्षेत्रों से यहाँ आते रहे। उनके साथ न केवल सैनिक टुकड़ियाँ होती थीं,बल्कि उनके सेवक,कारीगर,शिल्पी और धर्म के व्याख्याता ब्राह्मण पंडित–आचार्य भी होते थे। इन राजपरिवारों द्वारा पश्चिमी मध्य हिमालय क्षेत्र में अपने–अपने राज्य स्थापित कर लिए जाने से इस क्षेत्र की अनेक स्थानीय ठकुराइयों का पतन एवं पराभव हो गया। वह या तो इन राजपूतों से पराजित होकर नष्ट हो गये अथवा अधिक ऊँचाई वाले दुर्गम क्षेत्रों में पलायन कर गये या फिर इन राजपूतों द्वारा राज्यों में इनके अधीनस्थ सामन्त बन गये।[33]

आरम्भिक तुर्की सुल्तानों ने,शासनकाल के इतिहास लेखकों,जो भारतीय परिवेश में नये थे और यहाँ के, विशेषकर हिमालयी क्षेत्र में स्थित पर्वतीय राज्यों से भलि–भांति परिचित नहीं थे,उन्होंने इन पर्वतीय राज्यों का उल्लख उनके पृथक–पृथक नामों से न करके,उन सबके लिए सामुहिक रूप से शिवालिक नाम का प्रयोग किया है।[34] इसी कारण कतिपय स्थानीय इतिहास लेखकों ने यह मान लिया है कि आरम्भिक तुर्की सुल्तानों के समय में पश्चिमी एवं मध्य हिमालय क्षेत्र में अवस्थित राज्य इन सुल्तानों की शक्ति,प्रभुत्व एवं सत्ता से अप्रभावी रहे।[35] परन्तु जहाँ तक शिवालिक क्षेत्र का सम्बन्ध है,उस दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों के अभियान तो कुतुबुदीन ऐबक के समय में ही आरम्भ हो चुके थे,विशेष

© SHARAD

कर कोह–ए–पाय अर्थात पाद चोटियों एवं तराई भाबर भू–क्षेत्र पर। मिन्हाज की सूचना के अनुसार ''.... ...इल्तुमिश ने उन समस्त प्रदेशों अर्थात् दिल्ली, बदायूँ, अवध तथा' सम्पूर्ण शिवालिक प्रदेश' पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया था,जिन पर ऐबक शासन करता था...''।[36] मिन्हाज के इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि दिल्ली सल्तनत की स्थापना के तुरन्त पश्चात ही शिवालिक पहाड़ियों एवं कोह–ए–पाया पर दिल्ली सुल्तान का आधिपत्य स्थापित हो गया था। मिन्हाज के विवरणों के अनुसार मन्दूर(मंडावर) के पतन के पश्चात् (सन् 1227) इल्तुतमिश द्वारा समस्त शिवालिक पहाड़ी प्रदेश जीत लिया गया।[37] कतिपय स्थानीय इतिहास लेखकों ने यह मत व्यक्त किया है कि इल्तुमिश की शिवालिक विजय स्थायी सिद्ध नहीं हुई।[38] परन्तु मिन्हाज स्पष्ट लिखता है कि रज़िया ने शिवालिक प्रदेश के प्रशासक इख्तियारउद्दीन ऐतगीन को शिवालिक के स्थान पर बदायूँ का इक्तेदार नियुक्त किया था।[39] अतः यह स्पष्ट है कि रजिया के समय में भी शिवालिक पर्वतीय प्रदेश को एक इक्ते (प्रशासनिक इकाई) के रूप में संगठित किया जा चुका था।[40] शिवालिक क्षेत्र,पाद पर्वतीय क्षेत्र दिल्ली पर दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों के सैनिक अभियानों के फलस्वरूप इस क्षेत्र के आदिकालीन शासकों ने इन क्षेत्रों को छोड़ कर ऊपरी पर्वतीय प्रदेशों में पलायन किया और वहाँ अपने गढ़ों की स्थापना कर ली।

पश्चिमी एवं मध्य हिमालयी क्षेत्र के अपेक्षाकृत अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में अवस्थित पर्वतीय राज्यों पर दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों ने सैनिक अभियान नहीं किये। यही कारण था कि इस क्षेत्र के ऐसे पर्वतीय राज्य दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों के विद्रोहियों एवं सत्ता प्राप्ति के संघर्ष में असफल रहे प्रत्याशियों के शरण स्थल बने रहे। रजिया के एक विद्रोही अमीर निजामउद्दीन जुनैदी ने सिरमौर के पर्वतीय भू–प्रदेशों में शरण ली थी।[42] सन् 1248 में मध्य शिवालिक क्षत्र (गढ़वाल–कुमाऊँ) के पाद पर्वतीय प्रदेश में अराजकता उत्पन्न हो जाने का उल्लेख प्राप्त होता है। इस अराजकता को समाप्त करने के लिए संभल के सूबेदार मलिक जलाउद्दीन को सुल्तान से अतिरिक्त सैन्य सहायता मांगनी पड़ी थी।[43]

सुल्तान नासिरउद्दीन महमूद के शासनकाल के आरम्भ में शिवालिक क्षेत्र में उत्पन्न अराजकता एवं इसके निकटवर्ती पर्वतीय राज्यों में सल्तनत के विद्रोहियों को सरलता से शरण प्राप्त हो जाना आदि तथ्य यह आशंका उत्पन्न करते हैं कि इस काल में शिवालिक क्षेत्र पर दिल्ली सुल्तान की पकड़ कुछ शिथिल हो गई थी। संभवतः इसका मुख्य कारण रज़िया के पतन के पश्चात् दिल्ली के सिंहासन पर कठपुतली शासकों का आसीन होना था।[44] यह शासक शिवालिक क्षेत्र पर कठोर आधिपत्य स्थापित नहीं कर सके। यही कारण था कि सुल्तान नासिरउद्दीन महमूद ने शिवालिक क्षेत्र में शांति–व्यवस्था स्थापित करने के लिए अनक कठोर सैनिक अभियान किये। इन अभियानों में सर्वाधिक उल्लेखनीय अभियान मध्य हिमालयी क्षेत्र की पाद चोटियों पर किया गया अभियान था। सन् 1254–55 में उलुग ख़ाँ ने यह अभियान आरम्भ किया। शाही सेना ने यमुना नदी पार कर गढ़वाल भाबर की ओर प्रस्थान किया। मियापुर (मायापुर) पर गंगा पार करके पहाड़ियों की तलहटी में शाही सैना ने उपद्रवियों का दमन किया। पाद पर्वतीय प्रदेश के राणा ने कठोर प्रतिरोध किया। उसने तकलावाली में शाही सेना पर कठोर प्रहार किया। इस संघर्ष में शाही सेनानायक रज़ी उल मुल्क ईजुद्दीन दमीशी मारा गया।[46] निज़ामी के अनुसार दमीशी के हत्यारों को दण्डित करने के लिए शाही सेना ने कठोर कार्रवाई की।[47]

© SHARAD

गढवाल–कुमाऊँ की पाद चोटियों की भांति ही सिरमौर का पाद पर्वतीय क्षेत्र भी विद्रोहीयों का शरण स्थल बना हुआ था। सन् 1256–57 में सुल्तान नासिरउद्दीन के एक विद्रोही अमीर कुतलुग खाँ ने सिरमौर की पादचोटियों में शरण ली।[48] उसने सिरमौर के राणा दलपत हिन्दी की सहयता से वहाँ अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली। राणा दलपत हिन्दी की सहायता से कुतलुग खाँ उलुग खाँ के इक्ता (शिवालिक) में समस्यायें उत्पन्न कर सकता था। अतः उलुग खाँ (बल्बन) ने उसके दमन के लिए सिरमौर की ओर प्रस्थान किया।उसकी सेना ने सन्तूरगढ़ पर अधिकार कर लिया।राणा एवं कुतलुग खाँ भाग निकले। मिन्हाज के अनुसार दिल्ली सुल्तान की सेना ने प्रथम बार इस पर्वतीय प्रदेश में प्रवेश किया था।[49] सन्तूरगढ़ पर अधिकार करके उलुग खाँ ने सिरमौर के पादपर्वतीय क्षेत्र में शांति एवं व्यवस्था स्थापित की । निःसन्देह शिवालिक का इक्तेदार नियुक्त होने के पश्चात् उलुग खाँ ने अराजकता फैलाने वाले तत्वों का बडी कठोरता के साथ दमन किया। यह उलुग खाँ की दमनकारी नीति का ही परिणाम था कि आगामी कई दशकों तक शिवालिक क्षेत्र में शांति बनी रही। खिल्जी सुल्तानों के समय में भी शिवालिक एवं मध्य हिमालयी क्षेत्र की पाद चोंटियों तथा तराई भाबर पर दिल्ली सुल्तानों का अधिकार बना रहा। अलाउद्दीन खिल्जी के शासनकाल में शिवालिक ढालों पर मंगाल आक्रमणकारियों से शाही सेना के संघर्ष का उल्लेख प्राप्त होता है।[50]उसके शासनकाल के अन्तिम वर्षो में हिमालय एवं गंगा के बीच का प्रदेश (सिरमौर–गढ़वाल का भाबर क्षेत्र) युवराज खिज्र खाँ को शिकार खेलने के लिए प्रदान किया गया था।[51] उसने इस क्षेत्र में अपने नाम पर खिज्राबाद नामक करबा बसाया। अलाउद्दीन खिल्जी के मृत्यु के पश्चात् दिल्ली सुल्तानों का प्रभुत्व शिथिल पड़ता प्रतीत होता है। अतः कालान्तर में मौहम्मद बिन तुगलक को पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में काँगड़ा–नगरकोट तथा मध्य हिमालयी क्षेत्र में कुमाऊँ के राजाओ के विरुद्ध सैनिक अभियान करने पड़े। कुमाऊँ के स्थानीय इतिहास से ज्ञात होता है कि मौहम्मद बिन तुगलक ने कुमाऊँ के राजा धर्मचन्द (1321–44) के समय में कुमाऊँ की तराई और पाद पर्वतीय प्रदेश पर अधिकार कर लिया था,[52] परन्तु कालान्तर में उसने कुमाऊँ वासियों को तराई भू–प्रदेश का उपभोग करने की अनुमति इस अनुबन्ध के साथ दे दी कि वह सुल्तान को निर्धारित भूमिकर का भुगतान करते रहेंगे।[53] सन् 1338 में मौहम्मद बिन तुगलक ने काँगड़ा–नगरकोट पर आक्रमण किया। काँगड़ा के समकालीन राजा ने सुल्तान से समझौता कर लिया। यद्यपि कमाऊँ के राजा के साथ मौहम्मद बिन तुगलक के समय में हुआ समझौता फिरोज तुगलक के समय में भी बना रहा,परन्तु काँगड़ा के राजा ने वार्षिक का के भुगतान किये जाने सम्बन्धी समझौते का निर्वाह कालान्तर में नहीं किया, अतः सन् 1360 में फिरोज तुगलक ने काँगड़ा–नगरकोट पर आक्रमण किया।[54] उस समय काँगड़ा नगरकोट पर रूपचन्द शासन था।[55] वह एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था, अतः उसने दिल्ली सुल्तान के प्रभुत्व को नकार दिया। उसने शिवालिक पहाड़ियों एवं तलहटी में नियुक्त मुस्लिम अधिकारियों एवं सैनिकों पर घात लगाकर आक्रमण करने आरम्भ कर दिये। दूसरी ओर उसने कश्मीर के शासक शहाबुद्दीन के सीमावर्ती क्षेत्रों में भी अतिक्रमण किया।[56]

रूपचन्द की महात्वाकांक्षाओं पर अंकुश लगाने एवं उसे अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य करने के उद्देश्य से सुल्तान फिरोज तुगलक ने सन् 1360–61 में काँगड़ा के विरुद्ध सैनिक अभियान आरम्भ किया। एक विशाल सेना के साथ उसने शिवालिक पहाड़ियों में प्रवेश कर काँगड़ा की ओर प्रस्थान

© SHARAD

किया। बिना किसी प्रबल प्रतिरोध के उसकी सेना काँगड़ा दुर्ग तक पहुँच गई।[57]रूपचन्द ने स्वयं को दुर्ग में बंद कर लिया। शाही सेना ने उसके इलाकों को लूटा। अंततः 6 माह की घेराबंदी के पश्चात रूपचन्द एवं सुल्तान के बीच सन्धि हो गई। रूपचन्द ने सुल्तान फिरोज तुग़लक की अधीनता स्वीकार कर ली।[58] सत्ता पर रूपचन्द का अधिकार बना रहा, परन्तु सुल्तान ने काँगड़ा की तलहटी के उपजाऊ भू–प्रदेश पर अधिकार दृढ़ करके उसकी सुरक्षा व्यवस्था की।उसने सिरमौर के पाद पर्वतीय क्षेत्र में नहरों का निर्माण कराया।[59] सहारनपुर से ऊपर की शिवालिक श्रेणियों के रायों से ख़िराज वसूल किया तथा सलूरा और ख़िज्राबाद से अशोक की लाटों को दिल्ली लाया[60] इस प्रकार उसने शिवालिक एवं तराई–भाबर क्षेत्र पर प्रभुत्व को दृढ़ बनाया। फ़िरोज तुग़लक ने कुमाऊँ के राजा द्वारा सुल्तान के विद्रोहियों को शरण देने के अपराध में कुमाऊँ के तराई प्रदेश के एक बड़े भू–भाग पर अधिकार कर लिया। कुमाऊँ के राजा गरूड़ ज्ञानचन्द द्वारा फ़िरोज तुग़लक के दरबार में उपस्थित होने और सुल्तान से तराई प्रदेश वापस कर देने के निवेदन पर कुमाऊँ के राजा को तराई प्रदेश पुनः प्राप्त हो गया।[61]
फ़िरोज़ तुगलक ने 1387 में अपने पुत्र नासिरउद्दीन को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था, परन्तु फ़िरोजी दासों ने उसका विरोध किया। उन्होने अपने प्रत्याशी फ़तेह ख़ाँ के पुत्र को सिंहासन पर बैठा दिया। सत्ता प्राप्ति के प्रयासों में असफल हो जाने के पश्चात् नासिरउद्दीन भाग कर सिरमौर की पहाड़ियों में चला गया।[62] फ़तेह ख़ाँ के पुत्र ने तुग़लक शाह द्वितीय (1388–89) की उपाधि धारण कर शासन कार्य आरम्भ किया। उसने शीघ्र ही एक सेना नासिरउद्दीन के विरुद्ध सिरमौर की पहाड़ियों में भेजी। बाध्य होकर वह सिरमौर से ऊपर काँगड़ा की पहाड़ियों में पलायन कर गया।[63]शाही सेना उसका पीछा करती हुई काँगड़ा के निकट पहुँच गयी, परन्तु काँगड़ा की सेना शाही सेना का प्रबल प्रतिरोध किया, अतः शाही सेना को सफलता प्राप्त नहीं हुई और वह वापस दिल्ली लौट गई। यद्यपि नासिरउद्दीन के पुनः सत्तारूढ़ हो जाने से राजसिंहासन प्राप्ति सम्बन्धी संशय एवं विवाद समाप्त हो गया, परन्तु सल्तनत में अराजकत उत्पन्न हो गई। राजधानी से पश्चिम के क्षेत्र के राजपूत सरदारों की शक्ति में वृद्धि के कारण अव्यवस्थित हो चुके थे। अमीर अवज्ञाकारी हो गये थे और उनके स्वेच्छाचारी हो जाने से सल्तनत पर केन्द्रीय प्रभुत्व शिथिल होता जा रहा था। इस अव्यवस्था का लाभ तैमूर ने उठाया और 1398 में सल्तनत पर आक्रमण करके दिल्ली पर अधिकार कर लिया।

7 दिसम्बर,1398 को दिल्ली में लूटमार करने के पश्चात तैमूर ने फ़िरोज़बाद, मेरठ,हरिद्वार होते हुए शिवालिक पर्वतीय प्रदेश में प्रवेश किया।[64] उस समय शिवालिक पर्वत श्रेणियों एवं काँगड़ा के पर्वतीय प्रदेश के मध्य स्थित भू–प्रदेश पर रतन सिंह नामक राजा का अधिकार था।[65] रतन सिंह ने तैमूर की आक्रमणकारी सेना का प्रतिरोध किया,परन्तु तैमूर की विशाल सेना के सम्मुख वह पराजित हुआ। रतनसिंह एवं अन्य कई छोटे–बड़े रायों को पराजित करने के पश्चात् जनवरी 1399 में तैमूर ने काँगड़ा पर आक्रमण किया। तैमूर की आत्मकथा में उपलब्ध विवरण के अनुसार "..... नगरकोट(काँगड़) पहुँचने पर मुझे (तैमूर को) इस पर्वतीय प्रदेश की समृद्धि का पता चला, तो इस स्थान पर विजय प्राप्ति के लिए मै दृढ़संकल्प हो गया। इसलिए मैंने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया और उस ओर प्रस्थान किया।"[66] तैमूर के काँगड़ा आक्रमण के समय काँगड़ा का राजा मेधचन्द था। मेघचन्द भी तैमूर का प्रतिरोध नहीं कर सका। काँगड़ा को लूटने के पश्चात तैमूर पठानकोट होता हुआ जम्मू पहुँचा और वहाँ से सिन्धु

नदी पार करके वापस अपने देश लौट गया।[67] तैमूर की वापसी के कुछ वर्ष पश्चात काँगड़ा पर कठौचवंशीय राजा ने पुनः अधिकार कर लिया।[68] सन् 1405 में हरिचन्द काँगड़ा की राजगद्दी पर बैठा। तैमूर के आक्रमण के फलस्वरूप तुगलक वंश का पतन हो गया और खिज्र खाँ सैयद ने सैयदवंश की स्थापना कर ली। निःसन्देह तैमूर के आक्रमण एवं दिल्ली सल्तनत के आधिपत्य को शिथिल बना दिया। सैयद मुबारक शाह के शासनकल में पश्चिमी हिमालय क्षेत्र पर दिल्ली सल्तनत के आधिपत्य को शिथिल बना दिया। सैयद मुबारक शाह के शासनकाल में पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के पाद पर्वतीय क्षेत्र में जसरथ शेखा खोखर के विद्रोह से अराजकता फैल गई।[69]उसने लदुरहाना (लुधियाना)कस्बे और सतलंदर के किनारे–किनारे अरूबर (रोपड़–अम्बाला के निकट) की सीमा तक के स्थानों को उजाड़ डाला। जुलाई 1421 में सुल्तान ने शेखा खोखर के दमन के लिए सरहिन्द की ओर प्रस्थान किया।[70]

पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के पाद पर्वतीय क्षेत्र की भाँति मध्य हिमालय क्षेत्र के पाद पर्वतीय क्षेत्र में भी विद्रोह हुआ। सन् 1414–15 में कटेहर के राय हरि सिंह ने सुल्तान खिज्र खाँ सैयद के विरुद्ध विद्रोह किया।[71] शाही सेना के आगमन पर वह आँवला से भाग कर कुमाऊँ की पाहड़ियों में चला गया। शाही सेना ने कुमाऊँ की पाद चोटियों पर आक्रमण करके हरि सिंह को सुल्तान की अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य कर दिया,[72]परन्तु चार वर्ष पश्चात् (1418) उसने पुनः विद्रोह कर दिया। वह पुनः आँवला से ऊपर की कुमाऊँ की पहाड़ियों में भाग गया। सुल्तान ने बीस हजार सैनिकों की एक विशाल सेना उसका पीछा करने के लिए भेजी। यद्यपि शाही सेना ने उसकी सेना तथा सामग्री को नष्ट कर दिया,परन्तु शाही सेना उसे पकड़ने में असफल रही।[73] शाही सेना ने रामगंगा एवं संभल के निकटवर्ती उन भू–स्वामियों को दण्डित किया, जिन पर हरि सिंह की सहायता करने का संदेह था। ऐसा प्रतीत होता है कि सैयद मुबारक शाह के समय में हरि सिंह के अपराध क्षमा कर दिये गये। सन् 1424 में सुल्तान मुबारक शाह कटेहर पहुँचा। हरि सिंह ने विगत तीन वर्ष से राजस्व का भुगतान नहीं किया था, अतः उस पर सैनिक दबाब बनाया गया। वह पुनः कुमाऊँ की पहाड़ियों में न भाग जाये,अतः कुमाऊँ की सीमा पर सतर्कता बढ़ा दी गई।[74] सुल्तान ने कुमाऊँ के पाद पर्वतीय क्षेत्र में अराजकता फैलाने वालों को दण्डित किया और वापस राजधानी लौट गया।

लोदीवंशीय सुल्तान अपनी आंतरिक समस्याओं में ही उलझे रहे। लोदीवंश के संस्थापक बहलोल लोदी को जहाँ एक ओर जौनपुर के शर्कियों से संघर्ष करना पड़ा,वही दूसरी ओर उसे अपने उद्दण्डी सरदारों के दमन के लिए भी कठिन प्रयास करने पड़े,अतः वह पश्चिमी एवं मध्य हिमालयी क्षेत्र में अवस्थित पर्वतीय राज्यों की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दे सका। यही स्थिति सिकन्दर लोदी एवं इब्राहीम लोदी के समय में भी रही।

निष्कष : उक्त अध्ययन–विश्लेषण से यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि दिल्ली सल्तनत के सुल्तान पश्चिमी एवं मध्य हिमालयी क्षेत्र में अवस्थित पर्वतीय राज्यों से अनभिज्ञ नहीं थे। अतः उन पूर्ववर्ती इतिहास लेखकों की इन अवधारणाओं में संशोधन की आवश्यकता है कि दिल्ली सल्तनत के सुल्तान पश्चिमी एवं मध्य हिमालयी क्षेत्र में अवस्थित समकालीन पर्वतीय राज्यों एवं राजाओं से अनभिज्ञ थे और दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों द्वारा इस पर्वतीय अंचल में की गई राजनीतिक–सैनिक गतिविधियों का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। उक्त अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि इस पर्वतीय अंचल में दिल्ली

सल्तनत के सुल्तानों की राजनीतिक एवं सामरिक गतिविधियाँ तो दिल्ली सल्तनत की स्थापना के प्रथम दशक में ही आरम्भ हो गई थीं,जिनका इन पर्वतीय राज्यों में व्यापक राजनीतिक–कूटनीतिक प्रतिफलन भी हुआ।

सन्दर्भ :–

1. निज़ामी, के0ए0,पोलिटिक्स एण्ड सोसाइटी डियुरिंग द अर्ली मिडिवल पीरियड (कलैकटेड वर्क्स ऑफ प्रो0 मोहम्मद हबीब),भाग 2, पृ0 51,दिल्ली,1981.
2. अन्सारी,मोहम्मद अज़हर,अशरफ,जावेद एवं अहमद,तसनीम,ज्योग्राफ़िकल गिलम्पसेज़ ऑफ मिडिवल इंडिया,भाग 3, पृ0 79,दिल्ली,1989.
3. निज़ामी, के0ए0वही, पृ0 51.
4. सांकृत्यायन,राहुल,हिमाचल,भाग 1 पृ0 153,दिल्ली,1994 राहुल ने लिखा है कि महमूद गज़नवी को पहले से ही यहाँ के प्राचीन मंदिर की विशाल सम्पत्ति का पता था।.....काँगड़ा की सेना आनंदपाल की सहायता के लिए गई हुई थी, इसलिए काँगड़ा का अजेय समझा जाने वाला दुर्ग उस समय सेना रहित था। इतिहास में अनेक बार शत्रुओं के दांत जिस दुर्ग ने खट्टे किये थे, उसने महमूद के सामने बिना प्रतिरोध के अपने दरबाजों को खोल दिया। महमूद गज़नवी को अधिक समय तक दुर्ग की घेराबंदी की आवश्यकता नहीं पड़ी।.....उसे वहाँ इतना धन मिला जिसे ऊंटों की पीठ नहीं ढो सकती थी,न बर्तनों में भरा जा सकता था, लेखकों के हाथ उसे लिपिबद्ध नहीं कर सकते थे और न गणितज्ञों की कल्पना में वह समा सकता था। कतिपय अन्य इतिहास लेखकों ने भी महमूद गज़नवी के काँगड़ा अभियान का एक मात्र उद्देश्य केवल वहाँ एकत्र विपुल धन–सम्पत्ति को लूटना को लूटना बताया है,परन्तु यहाँ यह तथ्य भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि सन् 1009 में पंजाब के राजा आनन्दपाल एवं महमूद गज़नवी के बीच हुए युद्ध में काँगड़ा के राजा को दण्डित किया जाना स्वाभाविक ही था।
5. अल उत्बी ने इनके नाम अल्तुन्ताश और अस्गथिगीन बतायें हैं,देखें,तारीख़–ए–यामिनी, इलियट–डाउसन,भाग 2, पृ0 34–35 (रिप्रिन्ट, देहली),1988.
6. निजामी,के0ए0, वही, भाग, 2, पृ0 51, चरक, एस0डी0, हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ हिमालयन स्टेट्स, भाग 1, पृ0 142,दिल्ली,1978 सांकृत्यायन, राहुल, हिमाचल, भाग 1, पृ0 153.
7. अहलुवालिया, एम0एस0, हिस्ट्री ऑफ़ हिमाचल प्रदेश, पृ0 76.,दिल्ली,1988.
8. सांकृत्यायन,राहुल, वही, भाग 1, पृ0 154 एवं अहलुवालिया, एम0एस0, वही, पृ0 76.

9–10. निजामी,के0ए0 वही, भाग 2, पृ0 91, उस समय लाहौर के अमीर पारस्परिक शक्ति परीक्षण में व्यस्त थे। अतः उन्होने काँगड़ा दुर्ग में फंसी हुई महमूद की सेना ने अपने जीवन एवं सम्मान की रक्षा के लिए दुर्ग को त्यागना ही उचित समझा।

11–12.हुचिसन एवं वोगेल,हिस्ट्री ऑफ द पंजाब हिल स्टेट्स,भाग 1, पृ0 121–123 लाहौर, 1933.

13–14. निज़ामी के0ए0(सं0) दिल्ली सुल्तनत, भाग 1, पृ0 136,दिल्ली,1978.

© SHARAD

15. फ़रिश्ता,मौहम्मद,कासिम,तारीख–ए–फ़रिश्ता,पृ0 57, भाग 1, फ़रिश्ता ने पृथ्वीराज चौहान की सैन्य संख्या दो लाख अश्वारोही और तीस हज़ार

हाथी बताई है। देखें, निज़ामी, के0ए0, दिल्ली सुल्तनत, भाग 1, पृ0 136.

16. अहलुवालिया,एम0एस0, हिस्ट्री ऑफ़ हिमाचल प्रदेश, पृ0 77.

17. प्रोसीडिंग्स,इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, 45 वां, अधिवेशन (1984), पृ0 254

18. वही, पृ0 258.

19. देखें, ग्रेवाल, जे0एस0 का अध्यक्षीय भाषण,प्रोसीडिंग्स,इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, (1984)

20. अहलुवालिया,वही,पृ0 56–58, मियां गोवर्धन सिंह, हिस्ट्री ऑफ़ हिमाचल प्रदेश, पृ0 74,कपूर, बी0एल0,हिमाचलः इतिहास और परम्परा,पृ 162,दिल्ली,1983.

21. सेठ,मीरा,वॉल पेटिंग्स ऑफ़ द वैस्टर्न हिमालयाज़, पृ0 19–21, दिल्ली,1981.

22–23. अहलुवालिया, वही, पृ0 55, सांकृत्यायन, राहुल,वही, भाग 1, पृ0 468.

24. सांकृत्यायन, राहुल, हिमाचल,भाग 1, पृ0 466.

25–30.सांकृत्यायन, राहुल, वही, भाग 1,पृ0 461,471,477,437,423, अहलुवालिया, वही, पृ0 56–60.

31–32. पांडे, बद्रीदत्त, कुमाऊँ का इतिहास, पृ0 233, अल्मोड़ा, 1937,भट्ट,मदन चन्द, 'चन्दकालीन कुमाऊँ पर नई नज़र', पहाड़,अंक–2, (1986), पृ0 24, शर्मा,एम0एल0, भारत का इतिहास, भाग 2, परिशिष्ट 'घ', पृ0 333.

33. सेमवाल, पी0एन0, पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के अतीत की झांकी, पृ0 20. दिल्ली,1983.

34. ज़ैदी, एस0ए0एच0, दिल्ली सलतनत के सुल्तानों के शिवालिक अभियान, हिमालयन जरनल ऑफ़ सांइसेज़, अंक–2,पृ0 67–73,पौड़ी गढ़वाल,1982.

35. पांडे, बद्रीदत्त, कुमाऊँ का इतिहास,पृ0 185, सिंह, कृष्णपाल,पहाड़,अंक–1, पृ0 31.

36. मिन्हाज,सिराजउद्दीन, तबक़ात–ए–नासिरी (फ़ारसी पाठ), पृ0 170–71, निज़ामी, के0ए0, द्वारा उद्धृत, देखें, दिल्ली सुल्तनत,भाग 1, पृ0 181.

37. वही, पृ0 234–35 एवं निज़ामी, के0ए0, वही, भाग 1, पृ0 188.

38. देखें, डबराल, शिव प्रसाद, उत्तराखंड का इतिहास, भाग 4, पृ0 109.

39 –40. निज़ामी, के0ए0, वही भाग1, पृ0 205.

41–43. वही, भाग 1, पृ0 205, 218.

44. रज़िया के पतन के पश्चात् सन्1240 से 1246 के मध्य कई सुल्तान सिंहासन पर बैठाये और उतारे गये।

45–46. निज़ामी, के0ए0, दिल्ली सल्तनत, भाग 1, पृ0 223.

47.–49. वही, भाग 1, पृ0 223, 226.

50. लाल, के0एस0, ख़िल्जीवंश का इतिहास, पृ0 144.

51. निज़ामी, के0एस0 वही, भाग 1, पृ0 353.

52. पांडे, बद्रीदत्त, कुमाऊँ का इतिहास, पृ0 240.

© SHARAD

53. इब्नेबतूता, रहेला, पृ098–99 एवं निज़ामी–ए–फ़िरोजशाही (हिन्दी अनुवाद), तुग़लकालीन भारत, भाग 2, पृ0 90–91। अफ़ीफ़ लिखता है कि काँगड़ा दुर्ग की घेराबंदी के समय एक दिन एक शुभ घटना हुई, जिसने सुल्तान एवं राय (रूपचन्द) के बीच सन्धि को सम्भव बना दिया। उस दिन सुल्तान फ़िरोज़ तुग़लक दुर्ग के घेरे का निरीक्षण कर रहा था। उसकी दृष्टि दुर्ग के ऊपर पड़ी। संयोग से राय दुर्ग के ऊपर था। वह आज्ञाकारियों की भाँति हाथ बांधकर खड़ा हो गया। सुल्तान ने यह देखकर अपना रुमाल निकाला और उसे हिलाकर राय की ओर संकेत दिया। राय ने अपने समस्त मंत्रियों को एकत्र किया और उनसे विचार–विमर्श किया। उन्होंने उसे सलाह दी कि सुल्तान के बुलाने पर राय को सुल्तान के पास चला जाना चाहिए। राय अभियान त्याग कर नीचे उतर आया। उसने दरबारी शिष्टाचार के अनुसार सुल्तान के सम्मुख उपस्थित होकर प्रणाम किया। तारीख़–ए–मुहम्मदी के अनुसार सुल्तान ने राय की पीठ पर हाथ रख कर उसके अभिवादन का सम्मान किया तथा उसे ज़रदोजी–ज़रबफ़्त की सम्माजनक पोशाक तथा छत्र प्रदान किया। देखें रिज़वी, अतहर अब्बास, तुग़लकालीन भारत, भाग– 2, पृ0 223.

59. निज़ामी, के0ए0 दिल्ली सल्तनत, भाग 1, पृ0 502.

60.' तारीख़–ए–मुबारकशाही के अनुसार सन् 1367 में कुमाऊँ की तराई सीमा से लगे कटेहर के मुकदम राय खरकू (खड़गसिंह) ने बदायूँ के सूबेदार सैयद मोहम्मद तथा उसके भाई सैयद अलाउद्दीन की हत्या कर दी। जब सुल्तान ने खरकू को दण्डित करने के लिए प्रस्थान किया,तब वह कुमाऊँ की पहाड़ियों में भाग गया। उसने वहाँ शरण प्राप्त कर ली। सुल्तान राय खरकू से अत्याधिक क्रोधित था। अतः शाहो सेना ने पूर्ण तत्परता से उसका पीछा किया। वह तो पकड़ में नहीं आया, परन्तु उसके सहायकों को कठोर दण्ड दिया गया। देखें हिन्दी रूपान्तर,शर्मा,एम0एल0, भारत का इतिहास, भाग 4, पृ0 11.

61. सुल्तान के अपराधी राय खरकू को शरण प्रदान करने के अपराध में कुमाऊँ के राजा को पाद पर्वतीय प्रदेश के एक बड़े भू–भाग से वंचित होना पड़ा। परन्तु कुछ समय बाद कमाऊँ के राजा गरूड़ ज्ञान चन्द एवं फ़िरोज़ तुग़लक के बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित हो जाने के कारण वह भू–क्षेत्र कुमाऊँ के राजा को लौटा दिया गया। देखें, पांडे, बद्रीदत्त, कुमाऊँ का इतिहास, पृ0 239–40.

62–63. याहिया बिन अहमद, तारीख़–ए–मुबारकशाही, हिन्दी रूपान्तर,शर्मा,एम0एल0, भारत का इतिहास, भाग 4, पृ0 15.

64. मुल्फ़ुज़ात–ए–तीमूरी (तुज्क–ए–तैमूरी),फारसी अनुवाद, हुसैनी,अबुतालिब,हिन्दी रूपान्तर,शर्मा,एम0एल0, भारत का इतिहास, भाग– 3, पृ0 33.

65 अहलुवालिया, एम0एस0, हिस्ट्री ऑफ़ हिमाचल प्रदेश पृ0 83.

66–67. मुल्फ़ुज़ात–ए–तीमूरी, वही,पृ0 333.

68. अहलुवालिया, एम0एस.,वही,पृ0 83.

69–70. रिज़वी, अतहर अब्बास, उत्तर तैमूरकालीन भारत, भाग 1, पृ0 24–26, अलीगढ़.

71–74. निज़ामी, के0ए0 दिल्ली सल्तनत,भाग 1, पृ0 516, 545.

© SHARAD